B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A(Hons) Part - II Paper - III Economics

1
16-9-2020

त्वरक (Accelerator)

Dr. S.K. Singh
Deptt of Economics

गुणक से यह पता चलता है कि प्रारम्भिक विनियोग का आय पर प्रभाव उपभोग-व्यय के माध्यम से पड़ता है। आरम्भ में विनियोग से जो आय प्राप्त होती है, उसे उपभोग के लिए व्यय किया जाता है, जिससे ~~अधिक~~ नयी आय उत्पन्न हो जाती है। त्वरक सिद्धांत (Acceleration principle) इस बात का अध्ययन करता है कि उपभोग बढ़ने पर विनियोग में किस सीमा तक अथवा किस अनुपात में वृद्धि होती है। यह सिद्धांत उपभोग व विनियोग का क्रियात्मक सम्बंध स्पष्ट करता है। उपभोग के शुद्ध परिवर्तन और विनियोग के शुद्ध परिवर्तन का अनुपात त्वरक द्वारा व्यक्त किया जाता है।

पूँजीगत पदार्थों (capital goods) के लिए माँग व्युत्पन्न माँग (derived demand) होती है अर्थात् इनकी माँग उपभोग पदार्थों की माँग से उत्पन्न होती है। स्पष्ट शब्दों में यदि लोग उपभोग-पदार्थों की माँग करते हैं तो उनके उत्पादन के लिए मशीनों आदि की माँग की जाती है। किसी निश्चित अवधि में उत्पादन में एक इकाई के बराबर वृद्धि करने के लिए पूंजी की कई इकाइयों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार, उपभोग पदार्थों की माँग बढ़ने पर उसे पूरा करने के लिए पूँजीगत-पदार्थों (अर्थात् विनियोग) की माँग बढ़ती है। पूँजीगत-पदार्थों की माँग व्युत्पन्न माँग होने के कारण ही त्वरक सिद्धांत को व्युत्पन्न माँग के त्वरक का सिद्धांत (The principle of Acceleration of Derived demand) कहते हैं।

त्वरक की धारणा केन्सियन अर्थशास्त्र से सम्बंधित नहीं है। केन्स ने (General theory) में इसका कहीं उल्लेख नहीं किया है। त्वरक की धारणा गुणक की धारणा से पहले की है और इसे अमरीकी अर्थशास्त्री जे० एम० क्लार्क (J M Clark) ने 1917 में बताया था। बाद में हैरोड, हिक्स, सैम्युलसन तथा गुडविन आदि अर्थशास्त्रियों ने त्वरक की धारणा का प्रयोग व्यापार-चक्रों के सम्बंध में किया। गुणक के साथ-साथ त्वरक का अध्ययन करना इसलिए आवश्यक हो जाता है, कि यह दोनों धारणाएँ व्यय के माध्यम से आय पर पड़ने वाले प्रभाव को व्यक्त करती हैं। दोनों धारणाएँ एक दूसरे के समान्तर (Parallel) हो परन्तु एक दूसरे से अलग है।

B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part - II Paper - IV Economics.

अवसर लागत सिद्धांत का मूल्यांकन.

Dr. S. K. Singh
Deptt of Economics

(Evaluation of the Opportunity Cost theory)

अब यह सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया है, कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का 'अवसर लागत सिद्धांत' वास्तविक लागत सिद्धांत की तुलना में श्रेष्ठ है। अवसर लागत सिद्धांत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के ढांचे का न केवल सही एवं वैज्ञानिक विश्लेषण ही प्रस्तुत करता है बल्कि इसे विश्लेषण के अपरिहार्य यंत्रों से सुसज्जित करता है तथा सामान्य साम्य विश्लेषण की प्रणाली को समझने के लिए अन्तर्दृष्टि भी प्रदान करता है इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के आधुनिक सिद्धांत के लिए आवश्यक भूमिका भी तैयार करता है।

फिर भी प्रतिष्ठित सिद्धांत के रक्षकों के अनुसार अवसर लागत सिद्धांत तो विश्लेषणात्मक कार्यों के लिए श्रेष्ठ है जबकि वास्तविक लागत सिद्धांत कल्याण विषयक अथवा नीति सम्बंधी अध्ययन के लिए उपयुक्त है। वे अपने तर्क के लिए समर्थन में यह दलील प्रस्तुत करते हैं कि अवसर लागत सिद्धांत वस्तु के उत्पादन में निहित श्रम की कष्टानुभूति, अनुपयोगिता को मापने में असमर्थ है। अतः इसका सम्बंध विश्लेषणात्मक अर्थशास्त्र (Positive Economics) से है न कि कल्याणकारी अर्थशास्त्र से। हेबरलर को संदेह है कि वास्तविक लागत सिद्धांत यदि विश्लेषणात्मक कार्यों के लिए उपयुक्त नहीं है तो वह किस प्रकार कल्याण फलन का निर्माण कर सकता है। इसके अतिरिक्त आधुनिक अर्थशास्त्रियों, जिनमें केम्प, सैम्युलसन तथा बाल्डविन भी सम्मिलित हैं, ने उत्पादन संभावना वक्र तथा उपयोगिता संभावना वक्र के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से प्राप्त होने वाले लाभ को कल्याण के रूप में सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया है। जहाँ तक वास्तविक लागत की माप का प्रश्न है, प्रो॰ जैकब वाइनर, जो प्रतिष्ठित सिद्धांत के कट्टर समर्थक हैं, ने स्वीकार किया है, कि अवसर लागत सिद्धांत "भूमि-प्रयोग लागतों को मापने की दिशा में एक तर्क संगत योगदान है" तथा वास्तव में जो बात भूमि के लिए सत्य है वही उत्पादन के अन्य साधनों के लिए कुछ सीमा तक श्रम के लिए भी सत्य है। इससे यह स्पष्ट है कि अवसर लागत वास्तविक लागत सिद्धांत की तुलना में श्रेष्ठ है।